78
986
H

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

Call No.

Accession No.

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

52 ✓

1162
10/21

986

॥ वन्देमातरम ॥

गान्धी की लड़ाई

उर्फ़

सत्याग्रह इतिहास

लेखक—पी० एम० वर्मा बुलन्दशहर

प्रकाशक - रामरिछपाल अवधूत देहली

तृतीय बार १००० मूल्य -)

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
8 - AUG. 1931
DEPARTMENT

891.431
PM 7549 G

ओ३म्

गान्धी आल्हा
उर्फ
सत्याग्रह इतिहास

१८५७ का गदर

॥ दोहा ॥

परःब्रह्म परमात्मन, सम्पूर्ण गुण—धाम ।
आल खंड जो मैं रचूं, सफल करो भगवान ॥

वीर छन्द (आल्हा)

सुमिरि भवानी जगदम्बा को, अरु शारद के चरन मनाय ।
आदि सरस्वती तुमको ध्यावो माता कंठ विराजो आय ॥
जंग कहूं मैं गांधीजी की, जामें सफल करो मोह माय ।
शुरू करूं हूं मैं अब इसको, सुनलो सकल सभा चितलाय ॥
ऐसो राज फिरंगी आयौ, परजा रही बहुत अकुलाय ।
इसी वजह से सत्तावन में दीनो यहां पर गदर मचाय ॥
हाल सुना दें कुछ उसका भी किस्सा साफ समझ आजाय ।
पूना के नाना साहब पेशवा उनको दिया बिठूर पठाय ॥
जब्त किया सब शासन उनका लिया अपने में उसे मिलाय ।
करी जब्त फिर पिशन उनकी दीना ऐसा हुक्म सुनाय ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 926
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

दोहा।

इसी तरह से और भी, छीने राज अनेक ।

महा युद्ध फिर जमगया, मेरठ एकाएक ॥

वीर छन्द (आल्हा)

भड़की आग फेर मेरठ में जो देहली में पहुंची जाय ।
बिगड़ गई फिर सेना सारी मार मार फिर दई मचाय ॥
पहुंचो खबर कानपुर में जब नाना उठे तरेरा खाय ।
ले बिठूर से सेना चाले लिया कानपुर यों हथियाय ॥
जानि सौंप दई सब गोरों ने पहुंचे सतीचौरा पै जाय ।
तोप दागि दई जब नाना ने दिया गंग में सबै डुबाय ॥
और डेढ़ सौ मेमें छोड़ीं इलाहाबाद को दिया पठाय ।
मार गिराया फिर डुइलर को बदला अपना लिया चुकाय ॥
इसी तरह से देहली में भी गोरों को फिर दिया भगाय ।
मुसलमान बूढ़े राजा को फिर गद्दी पर दिया बिठाय ॥

दोहा।

किले किले पर से सभी झंडा दिये उतार ।

आय बिठाया तखत पर बूढ़ शाह सर्दार ॥

वीर छन्द (आल्हा)

ऐसा हाल हुआ जब सबने गोरा भये बहुत खिसयाय ।
जनरल हैवलाक चढ़िआयो चढ़ो कानपुर को रिसयाय ॥
तोप लादि लईं सब नावों में दिये पास के गांव उड़ाय ।
लूट मचाय दई फिर गोरों ने गांव गांव का आग लगाय ॥
गांव छोड़ि के ना कोइ भागे गोली से फिर दिया उड़ाय ।

सुना हाल नाना ने जब झट बालराव को दिया पठाय ॥
बालराव वहां से चल आये और फतेपुर पहुंचे जाय ।
रचना करी व्यूह की ऐसी छुपके दुश्मन दिये छुड़ाय ॥
दोनों ओर से गोला चले गोला सांय सांय सन्नाय ।
जमा युद्ध आपस में ऐसा खून की नदियां दईं बहाय ॥

दोहा।

बालराव ने उस समय ऐसा हुक्म सुनाय ।
पुल अवंग का जल्द तुम द्वार देउ उड़ाय ॥

वीर छन्द (आल्हा)

गोरी फौज बढ़ी आगे को गोलन्दाज नहीं घबराय ।
छक्के छूट गये ज्वानों के भगदड़ पड़ी फौज में आय ॥
ऐसी मार करी गोरों ने पन्द्रह तोपें लईं छिनाय ।
इसी बीच में बालराव को गोला गिरे भवन पै आय ॥
हटी फौज पीछे नाना की हलचल हुआ दिखाला आय ।
बढ़ा हैवलक फिर आगे को पहुंचा तुरत कानपुर आय ॥
घर मकानें फिर तोपों से खून की नदियां दईं बहाय ।
हुआ कानपुर भी कब्जे में झंडा फहराया [illegible] ॥
इसी तरह से दिल्ली में भी घेरा जबरदस्त दिया डलाय ॥
इधर शाह बहादुर ने भी फाटक दीने बन्द कराय ।
एक तोप ने लईं बरछी के फौजें दिल्ली से दईं धसाय ॥

दोहा

दिल्ली में फिर उस समय चली खूब तलवार ।
बांकुरा से हैराना गोरा भागी मार ॥

वीर छन्द (आ०)

जो दरबाजों पर झुकके बैठे संगीनों पर लिया उठाय ।
किया कैद बूढ़े राजा को बरमा उसे दिया भिजवाय ॥
पकड़ पकड़ कर फिर लोगों को फांसी दई लाख लगवाय ।
हौल बैठ गई सबके दिल में दाना ऐसे गदर दबाय ॥
सन अट्ठावन में मलका ने दिया एक फरमान सुनाय ।
स्वराज्य दे देंयगे हम भारत को जब इस लायक होजाय ॥
लगे गांवने फिर मलका के बिरदावली छन्द बनाय ।
बना बना कर साँचो झूठी सबसे लिये हथियार रखाय ॥
दे दे करके लालच प्यारो रहे हिंद में लूट मचाय ।
बना बना के टैक्स अनेकों भारत भूखा दिया बनाय ॥

दोहा

इसी तरह से लूट कर किया हिंद बर्बाद ।
भेजे माल फिरंग को लन्दन हुआ अबाद ॥

कांग्रेस का जनम इतिहास

(२)

दोहा

बहुत दिनों के बाद फिर हुये तिलक महाराज ।
झंडा लेकर हाथ में ऊंची करी अवाज ॥

वीर छन्द (आ०)

हालत देखी निज जननी की झंडा ऊंचा लिया उठाय
है स्वराज्य अधिकार हमारा दीनी टेरी ज्वाय सुनाय
शहर शहर में जलसे कीने घर घर खबर दई पहुंचाय
महासभायें कायम कीनी शहर शहर में दई बनाय ॥
हाल समझ गये सारे गोरा तिलकदेव को पकड़ा जाय
बाद तिलक सी० आर० दास ने लानी बागडोरि सगुवाय
पंजाब केसरी परमानन्द ने शफा दीनी एक मचाय
इसी बीच में गांधीजी ने दीना अपना पैर बढ़ाय
हुआ काम बहुत ही भारी सारा भारत दिया जगाय
और बहुत से नेता होगये इनको कहाँ तक देइ गिनाय

—(::)—

असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ

सन चौदह में समर इक बिधि ने रचा महान।
जाने हैं इसको सभी जूझा सकल जहान ॥

वीर छन्द (आ०)

जर्मन में जब पड़ा मोरचा सन चौदह में भारी आय।
होश बिगड़ गये तब गोरों के दिल में बहुत गये घबराय॥
करी खुशामद फिर गोरों ने हमको रण में देउ सहाय।
होमरूल देवें हम तुमको पार्लिमिंट ने दिया सुनाय ॥

खूब बांधि दिये तारीफ़ों के कोरी बातें दई बनाय ॥
आगे किया गोरों का हमने लाखों जानें दई गंवाय ॥
कैसर गिराया फिर जर्मन को दीनी युद्ध में जीत कराय ।
होमरूल के एवज में फिर रौलट बिल को दिया बनाय ॥
बिगड़ उठे फिर नेता सारे आन्दोलन को दिया मचाय ।
शहर शहर में जलसे कीने हड़तालें भी दई कराय ॥
भड़का जोश यहाँ पर भारी जाकी कछु कही न जाय ।
उसका हाल जो कछु आवे प्यारे तुमको देउं सुनाय ॥

दोहा

अमृतसर पंजाब में जलियाँ बाग कहाय ।
जलसा होना था वहाँ डायर पहुंचा आय ॥

वीर छन्द (आ०)

जल्दी बन्द करो जलसे को बोला बीच सभा में आय ।
कोई न ठौर बढ़ा अपने से आसन दीने खूब जमाय ॥
नहीं उठेंगे तिल भर यहां से गोलो से तुम देउ उड़ाय ।
देखी हिम्मत जब लोगों की गुस्सा गया बदन में छाय ॥
तीन मिनट की मुहलत दीनी गोली दई फेरि चलवाय ।
मार गिराया फिर लोगों को खून की नद्दी दई बहाय ॥
फौजें बैठि गईं हर नाके पै गोरा पहरे दये लगाय ।
पानी भरने तक जो आये बन्दूकों से देइ उड़ाय ॥
गली सड़क पर जो कोइ पावे रेंगा चाल दई चलवाय ।
पकड़ पकड़ कर बालक पीटे रहे देह से खून चुचाय ॥

दोहा

क़िस्सा जलियाँ बाग का फैला हिंद तमाम ।
उमड़ा जोश फिर एकदम पबलिक खासो आम ॥

---:::---

सन् १९२१ असहयोग आंदोलन

का रुकना

(४)

दोहा

गोरखपुर में है सुना चौरी चौरा ग्राम ।
बिगड़ी पबलिक एकदम रोकि न सके तमाम ॥

वीर छन्द (क्र०)

भड़के लोग गाँव के मारे दई थाने को आग लगाय ।
काट गिराया थानेदार को गई खबर हिन्द में छाय ॥
उनमान लगाया कुछ लोगों ने अग्नि कहीं भड़क न जाय ।
खबर सुनी जब गान्धीजी ने हैरान गई बदन में छाय ॥
फैली अशांति कुल भारत में आन्दोलन को दिया थमाय ।
सोचा कुछ हो शायद उनने गलती भये यहां पर आय ॥
मौका मिला फेरि गोरों को दीनी यहां पर फूट कराय ।
मची फूट फेरि भारत में रक्षा करे भगवती माय ॥
खूब लड़ाया हम दोनों को मतलब अपना लिया बनाय ।
बने खूब हम पागल कैसे जरा सोचना दिल में आय ॥

---(::)---

सन १६३० के आन्दोलन का आरम्भ

(५)

दोहा।

पंडित मोतीलाल को जाने सकल जहान।
बने सदर श्रीमानजी कलकत्ते दरम्यान ॥

लै मंजूरी सब लोगो से रेजूलेशन इक दिया बनाय।
नेहरू रिपोर्ट को यों मानो या देउ माफ अलगाय ॥
मोहलत दीनी एक साल की साफ २ तुम देउ सुनाय।
ना मानोगे जो तुम हमको असहयोग को देइं चलाय ॥
आगि न्हैंगे फिर सोते से गाँधी डंका देइ बजाय।
करी घोषणा फेरि लार्ड ने गोलमेज को दिया दिखाय ॥
सर्वा सर्व गोलमेज है सबको ऐसा दिया सुनाय।
धोखा खाया कुछ लोगों ने मालिक ने फिर दिया सुनाय ॥
लाख शुकर हम उसका करते जिसने जाल से दिया बचाय।
खोला आंख वीरजनो की रक्षा करी हमारी आय ॥

दोहा

इसी समय लाहौर में सालाना इजलास।
महासभा का होरहा रावी तट के पास ॥

वीर छन्द (आ०)

बने सदर जवाहरलाल जो शुहरत रही जहाँ में छाय।
नेहरू रिपोर्ट को रद्दी करके दीना स्वराज्य का शंख बजाय ॥

सुना शोर है फिर गाँधी को वार कौंसिल दई मनाय ।
करीं पेश फिर ग्यारह शर्तें लाटसाब को दई सुनाय ॥
करें खुलासा कुछ उनका भी सुनलो प्यारे कान लगाय ।
अफ़ीम गांजा शराब सुलफा जल्दी इनको देउ हटाय ॥
नमक टक्स को साफ उड़ादो सेना खर्चे को देउ घटाय ।
दर सिक्के की तुमने घटाई प्यारे उसको देउ बढ़ाय ॥
करो लगान को बिलकुल आधा ऊँचे वेतन देउ घटाय ।
देशी कपड़ा बढ़ता पावे झूठो बिदेशी पै देउ बढ़ाय ॥
सागर तट का बणियाँ जहाज़ी महाजनों को देउ थमाय ।
पोलाटकल सब कैदी छोड़ो दफा बगावत देउ मिटाय ॥
जिला वतन जो भाई हमारे देश में साहब देउ बुलाय ।
खुफिया पुलिस को जल्द मिटादो बंदूक भी देउ दिलाय ॥

दोहा

ग्यारह शर्तें पेश कर दीना दूत पठाय ।
जवाब नदारद होगया सुनलो कान लगाय ॥

बीर छन्द (आ०)

करी घोषणा फिर गाँधी ने असहयोग को दिया चलाय ।
बारह मार्च को धावा कीना लीन्हे अपनी फौज सजाय ॥
फ़तह किया है फिर डाँडी को दीना वहाँ पर नमक बनाय ।
जागा भारत देसा भारी साल्ट ऐक्ट को दिया हटाय ॥
धकड़ पकड़ फिर जारी कीनी आंदोलन को दिया बढ़ाय ।
किया कैद फिर गाँधी जी को यरवदा जेल दिया पहुँचाय ॥

भड़का जोश और भी भारी कहीं कहीं गोली दई चलाय ।
दिल्ली पिशावर और किरांची बम्बई को भी देय गिनाय ॥
बाद गांधी तैयब जी ने सत्याग्रह को दिया बढ़ाय ।
बोला धावा नमक डिपो पै धरसाणा को देह बताय ॥
हुई मुठभेड़ वहाँ पर भारी निःशस्त्रों को दिया गिराय ।
कैद किया फिर तैयबजी को दिया जेल को उन्हें पठाय ॥

दोहा

तैयब जी के बाद फिर भारत कोकिला आन ।
बनी सदर हैं श्रीमती पकड़ा उनको आन ॥

वीर छन्द (आ०)

इससे पहले सब अखबारें जालिम ने दीं बन्द कराय ।
प्रेस पेपर को जारी करके गरदन उनकी दई दबाय ॥
फतह किया यों नमक मोर्चा धरना कपड़े पर दिया जमाय
कैद करे फिर नेहरू दोनों नैनी जेल को दिये पठाय ॥
हुआ काम फिर ऐसा भारी कपड़ा विदेशी दिया मिटाय
दुकाँ शराबी जितनी पाईं पिकटिंग सब पर दिया बिठाय
पकड़ा पकड़ी जोरों पर है जेलें सारी दई भराय ।
लोग उचक्के डाकू छोड़े जेलें खाली रहे कराय ॥
लूट मार के हैं अन्देशे लश्करा हमेशा रहे दिखाय ।
जान माल से चौकस रहियें प्यारे 'विशेष' देंइ जतलाय ॥
तारीख तिसरी अगस्त को सुनत गया घबराय ।
बम्बई में श्री मालवीय और ... को पकड़ा आय ॥
दोहा—अब तक के सब हाल ये तुमको दिये सुनाय ।
आगे का जो हाल है रहा गर्भ में आय ॥

(तर्ज—आसमानी चूड़ियाँ)

देखलूं मैं गान्धी का आशयाना देखलूं ।
दिल मेरा चाहता है तेरा अब जेलखाना देखलूं ॥
लाड़पन में लाठियाँ खाई थीं तेरे हाथसे ।
मैं भी अब वह हाथ तेरा जालिमाना देखलूं ॥
खारहे हैं गालियाँ भारत के सच्चेलाल अब ।
मैं भी तो खंजर जरा अब कातिलाना देखलूं ॥
आत्मा मरती नहीं है गालियों की मार से ।
कृष्ण की गीता का वह अब मैं तराना देखलूं ॥
स्वराज्य हमारा हक पैदायशी इसको लेना है जरूर
बच्चे २ का यह मैं अब दिवाना देखलूं ॥
इक दफा तो मरना है क्यों मौत कुत्तों की मरें ।
शेर मर्दों का धर्म पर सर कटाना देखलूं ॥
गोलियां खा सत्या और दिल में ख्वाहिश यही ।
भारत में आजादी का बजता शादियाना देखलूं ॥

देवियो उठो तैयार होवो अब बारी हमारी आ पहुंची ।
सत्या! गई जेलखाने में और बुलबुले हिंद भी आ पहुंची ॥

देवियों का सन्देश

(तर्ज—सब दिशाओं में धर्म की धूम मिलाती होगई)

शेरे बब्बर पैदा कर ॥

धर्म पर कुरबान हों जो प्यारे वह सर पैदा करो ।
कौम का जिन दर्द हो यहाँ वह जिगर पैदा करो ॥
खाल तुम्हारी आशा चाहे कष्ट लाखों ही सहें ।
राम जैसे देवियो तुम कुछ बशर पैदा करो ॥
ज्ञान और भक्ति सिखायें आन कर भारत में जो ।
वंशी वाले कृष्ण से सूरे नज़र पैदा करो ॥
धर्म के मैदान में न पीठ दिखलायें कभी ।
भीम अर्जुन की तरह सीना सिपर पैदा करो ॥
मन को रक्खे वश में सत्यव्रत का पालन करें ।
भीष्म और दयानन्द से ब्रह्मचारी नर पैदा करो ॥
जाने कुरबाँ करके अपना देश करें आज़ाद जो ।
शिवा और प्रताप से शेरे बब्बर पैदा करो ॥
सर कटायें शौक से पर धर्म न छोड़ें कभी ।
प्यारे हकीकतराय से बच्चे जिगर पैदा करो ॥
प्रेम हो प्रभु से सदा ए पाक दिल की देवियो ।
ताकि यह मन वश में होवे प्रभु का इसे शैदा करो ॥

गज़ल

बांधले बिस्तर फिरंगी राज अब जाने को है ।
    जुलम काफी कर चुके पबलिक बिगड़ जाने को है ।
गोलियाँ तो खा चुके तोप भी हम देख लें ॥
    मर मिटेंगे मुलक पर फिर इंकलाब होने को है ॥
वीर जवाहर जेल में हैं कौम के वह ना खुदा ।
    जेलखाना तोड़ देंगे यह हवा चलने को है ॥
कह रहे हैं बाबा गांधी मानलो शर्तें तमाम ।
    वरना फिर नकशा हकूमत का पलट जाने को है ॥
आगये पटेल भी अब कार जारे जंग में ।
    देख लेना राजशाही पेनकाद होने को है ॥
लिखदी गांधी ने चिट्ठी आखरी पं हुम के नाम ।
    अब संभलजा तू फिरंगिया वरना निशां मिटने को है ॥
मालवी ने वार अपना कर दिया इंगलैंड पर ।
    देखना अब मानचेस्टर भी उजड़ जाने को है ॥

जुलम हो रहा है

क्यों जुलम इतना हम पे सरकार हो रहा है ।
हम चाहते मगर कुछ इन्कार होरहा है ॥ १ ॥
जलियान बाग वाली जब याद तुम दिखाते ।
दिल दर्द से धड़क कर बेजार होरहा है ॥ २ ॥
पाकर के हमको दब्बू सब लोग हैं सताते ।
फर्ज़ी तुम्हारा देखो ? ख़बरदार होरहा है ॥ ३ ॥
बरबाद कर रहे हैं जो आशियाँ हमारा ।
उन का वतन शुरू से गुलज़ार होरहा है ॥ ४ ॥
हम थे स्वतन्त्र घर में गुजरा है वह जमाना ।
जो था कभी फिरंगी सरदार होरहा है ॥ ५ ॥
करदो रिहा कहां तब मुद्दत कफस में गुजरी ।
ठहरो जरा कभी तो इजहार होरहा है ॥ ६ ॥
दम घुट रहा है लेकिन कुछ सांस चलरही है ।
खंजर दिखाके कहते उपकार होरहा है ॥ ७ ॥
दुर्भिक्ष ये पड़ा है महंगी रुला रही है ।
फिर प्रिंस का भला क्या सत्कार होरहा है ॥ ८ ॥
भेजे हैं जेल नेता बागी सभी बताकर ।
गफलत में हिंद जो था होशियार होरहा है ॥ ९ ॥
हस्ती हमारी मेटो राज़ी हम उसी में ।
अब 'ला' यही तुम्हारा दरकार होरहा है ॥ १० ॥

मंगाइये पढ़िये क्रांतिकारी पुस्तकें खरीदिये

हमारी प्रकाशित		राष्ट्रीय नाटक		राजनैतिक पुस्तकें	
अंग्रेजों का ख्वाब		तेगेमिलम	॥।)	पंजाब हत्या	२।)
(जब्त होगया)		देशोद्धार	॥।)	सर्वस्व समर्पण	३।)
श्री शांतिदेवीकी प्रतिज्ञा		दुख्ये वतन	॥)	मेजनी के लेख	३)
(सरकार द्वारा जब्त)		हिन्द	१)	फांसी	१)
बहन सत्यवती का		मेरा देश	॥।)	२१ बनाम ३०	१॥)
संदेश (जब्त होगया)		भारतवर्ष	॥।)	शिवाजी बड़ा	४)
अंग्रेजी अकल गुम	–)	कर्मवीर चंड	॥।)	जन्म भूमि	३)
क्रांति गीतांजलि	=॥	सत्य विजय	॥।)	यतीन्द्रनाथदास	१)
क्रांतिकी चिनगारियाँ	।)	भक्त विदुर	॥)	सेवा आश्रम	२॥)
जालिम सरकार	=)	कबीरदास	१)	उषाकाल दोनों	
जलियानवालाबाग	–)	श्रीमतीमंजरी	॥।)	भाग	५)
झाँसी की रानी	–)	गौतम बुद्ध	॥।)	बहता हुआ फूल	२॥)
गाँधी की प्रशंसिनगान	=)	कर्मयोगी	॥।)	रंग भूमि सम्पूर्ण	५)
भारत माता की		शाही फर्मान		दोजख की आग	॥)
पुकार	–)	दानवीरकर्ण	॥=)	हवाई किला	॥।)
कौमी झण्डा	=)	गरीब किसान	॥।)	मास्टर साहब	२॥)
लाहौर काँग्रेस का		दुखिया भारत	॥।	वेश्या पुत्र	२॥)
एलान	–)	परशुराम	॥।)	दिल्ली का व्यभिचार	१)
गांधीकातोपखाना	–)	भारत दशा	॥।)	भारतीय वीर	१)
आजादी के गीत	=)	मदिरा देवी	॥=)	दयाल की कथा	२॥)

पता—भारत बुक एजेन्सी नई सड़क देहली

दूसरा पता—[illegible]जर शर्मा बुकडिपो

आर्तंड प्रेस देहली में छपा — नई सड़क देहली